रात्रि क्लास 1/3/1965 ओमशान्ति शिवबाबा याद है?

शिव–जयन्ती का भोग :– आज वास्तव में बड़े ते बड़ा मनाने का दिन भारत में खास है, जिसको महान ऊँच ते ऊँच दिन और कल्याणकारी दिन कहा जाता है। आज के दिन जैसे बड़े ते बड़ा उत्सव और कोई सारी दुनिया में हो नहीं सकता। आज का दिन है जो सर्व की सद्गति कर सर्व को शान्ति और सुख का वर्सा देते हैं। यह सिर्फ तुम बच्चे ही जानते हो। और भल शिव की पूजा करेंगे, मंदिर में जावेंगे; परन्तु इतना रहस्य और खुशी, जो तुम्हारी बुद्धि में है, वह कोई पास नहीं हो सकती। तुम उस बेहद के बाप का बर्थ डे मनाते हो, जिसके लिए आधा कल्प भक्त याद करते हैं कि हे पतित–पावन, आओ। अब बाप आया हुआ है तो कोटों में कोई जानते हैं। कहते हैं– 33 करोड़ देवताएँ थे। जो पावन थे सो पतित हो गए हैं। अब बाप खुद कहते हैं मैं आया हुआ हूँ। मेरे को अवतार लिए 27/28 वर्ष हो गए हैं। सो भी बच्चे हिसाब करेंगे तो वन परसेन्ट, हाफ परसेन्ट भी नहीं जानते। आगे चल पहचानते जावेंगे। जो–2 पहचानते जावेंगे वह फिर और मनुष्यों सदृश्य मंदिर में जाकर पूजा नहीं करेंगे। सम्मुख जो रहते हैं, वह तो खावेंगे–पीवेंगे। बाकी जो हैं वह सिर्फ मनाते रहेंगे। बच्चे बाप को भोग लगावेंगे, पीयेंगे। नचेंगे–टपेंगे खुशी में। बस। आज सभी के अंदर खुशी होगी। जो सारे दिन में भूल जाते हैं, वह भी आज खास याद करेंगे। इनको ऊँच ते ऊँच प्रौ कहते हैं। हमेशा बर्थ डे दिन खुशियाँ मनाते हैं। तुम बच्चों की खुशी बाहर की नहीं है। तुम्हारे अन्दर में खुशी है– कल्प बाद फिर से बाबा आया हुआ है, राजयोग सीखा रहे हैं, विश्व का मालिक बनाने माया रावण पर जीत पहना रहे हैं। कल्प–2 हराते हैं और जीत पहनते हैं। अब जीत पहन फिर वापस घर जाना है, फिर आकर राज्य करना है। कोई हथियार–पवार नहीं, योगबल से हम विश्व पर राज्य कर सकते हैं। कल्प–2 इस भारत भूमि पर दैवी राज्य चलाते हैं। उसी समय दूसरा कोई राज्य नहीं होता। वहाँ यह पता नहीं (प)ड़ेगा कि हमने यह राज्य कहाँ से लिया। अभी सभी का ड्रामा पूरा होना है। फिर नए सिरे, जो नूँध है, हरेक का अपना पार्ट अपने समय पर इमर्ज होता है। उसी अनुसार सभी एक्ट करने लगते हैं। सतुयग में थोड़े ही हिस्ट्री–जाग्राफी पढ़ेंगे; जैसे यह पढ़ते हैं। इस समय तुम्हारा बहुत भारी मर्तबा है। तुमको खुशी होती है, फिर बाबा आया हुआ है। अभी खेल पूरा होता है, फिर शरीर छोड़ना है। शिवबाबा खुद (जी)ते तुम्हें खिलाते–पिलाते हैं। खुद बच्चों के सामने बैठे हैं। सभी सेन्टर्स के बच्चे जानते हैं, बाबा बच्चों के सामने बैठे होंगे, गोद में बिठाते होंगे, साथ में भोजन खाते होंगे। दुनिया की बुद्धि और तुम्हारी बुद्धि में रात–दिन का फर्क है। बच्चों को सतयुग के वर्सा लायक बनाते हैं। कृष्णपुरी को तो सभी बहुत याद करते हैं। बाप के पुरी को भी याद करते हैं कि निर्वाणधाम, वानप्रस्थ में जावें। जब मरने का सवाल आता है तो डर जाते। बीमारी में डर रहता है। उनको निश्चय नहीं कि सचमुच हम जाते हैं। यह एक रसम पड़ी हुई है 60 वर्ष के बाद वानप्र(स्थ) लेते हैं। अब यह संगम का सुहावना, कल्याणकारी युग है। पुरानी दुनिया का विनाश और नई दुनिया की स्थापना होनी है। तो कितनी खुशी होनी चाहिए। बाप को याद करते रहें तो सदैव हर्षित भी रहें। धंधा आदि करते भी यह याद रहे हम विश्व के मालिक बनते हैं। गृहस्थ व्यवहार में रहते यह सेकेण्ड कोर्स उठाना है। सिर्फ बाप और वर्से को याद करना है। हमने 84 जन्म ऐसे–2 पूरे किए। यह स्वदर्शनचक्र यह निशानी है। शंख, चक्र और गदा दिखाए हैं माया पर जीत पाने लिए और कमल फूल समान पवित्र भी रहना है। पदम भी दिखाते हैं। तो तुम पदमपति बनेंगे। तो कितना नशा होना चाहिए। छी–2 चीज़ को भूलना है और अच्छी चीज़ को याद करना है। देही–अभिमानी बनो। नंग आए थे, नंगे जाना है। बाबा भी नंगा है ना। बहुत इज़ी है। यही चर्चा करते, एक/दो को सावधान करते, उन्नति को पाओ। अच्छा, नमस्ते।

सूचनाः– राजकोट रेडिओ स्टेशन से मीडियम वेव मीटर पर भ्राता जगदीश जी का रेडिओ पर भाषण 5 अप्रैल सायं 6:30 और 7 बजे के बीच में युवक प्रोग्राम में प्रसारित होगा। विषय है 'नवयुवकों के लिए धर्म की आवश्यकता'।